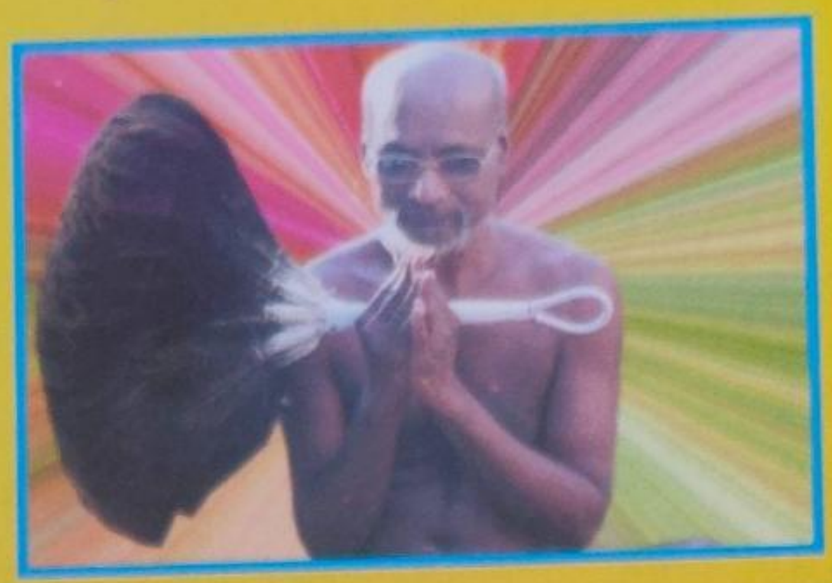

जयकार- स्वागत मंगलगान

हल्दीघाटी में
जैन एकता....विश्व शान्ति

चाल : 1. सायोनारा...2. जननी... 3. रघुपति... 4. आओ बच्चों

सृजन- मुनि सुविज्ञसागर

जय बोलो...2 विश्वधर्म की जय बोलो... जैन धर्म की जय बोलो...
जिनवाणी की जय बोलो... श्रमण संघ की जय बोलो... विश्वगुरु कनकनन्दीजी/ (की)
उदार भाव से जय बोलो ... सब मिल कर के जय बोलो...

जैन एकता स्वागतम्... विश्वशान्ति स्वागतम्...
हल्दीघाटी स्वागतम्... अरावली नग स्वागतम्...
क्रान्ति भूमि स्वागतम्... वीर/(त्याग) भूमि स्वागतम्...
आजादी की आद्य आहुति... मेवाड़ क्रान्ति स्वागतम्...

आओ जैन अजैन बन्धु... सब मिल मंगल गान करें...
वीर महाराणा प्रतापी... स्वतंत्रता जयगान करें...
भामाशाह उदार दानी... राष्ट्र का कल्याण करें...
पन्नाधाय महा बलिदानी... देश का नव उत्थान करें...

कनकनन्दी जी विज्ञानी... ज्ञान की गंगा लाए हैं...
देश विदेश के वैज्ञानिक जन... विद्यार्थी/(शोधार्थी) बन आये हैं...
शोध-बोध-संगोष्ठी द्वारा... वैश्विक उदारता आयी...
महाविश्वविद्यालय जैसी... कार्यशाला प्रायोगिकी...

धर्म-अध्यात्म विज्ञान का... यहाँ समन्वय दिखता है...
इस एकान्त वन भूमि में... दिव्य/(ज्ञान) प्रकाश फैला है...
वर्षायोग आचार्य संघ का... महान् मंगलकारी है...
सब जन-गण-मन मिलकर गायें... समन्वय का गाना है...

Scanned by TapScanner

हल्दीघाटी से जैन एकता विश्वशान्ति के लिये आह्वान

अखिल भारतीय जैन एकता मंच की महान् उपलब्धि

चाल : 1. तुम दिल की धड़कन ... (शत-शत वन्दन) 2. सायोनारा 3. जननी...4. नगरी.... 5. आओ बच्चों

सृजन - श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

आओ सब जन मिलकर गायें... गीत समन्वय शान्ति के...
अरावली की हल्दीघाटी में... जन-जन का, मन हर्षित/(अभिनन्दन) है...
वन्दे सूरीवरम... वन्दे गुरुवरम्

यहाँ राणा का जश्न चला था... आजादी के नारों से ...
गुलामी की हलुआ-पूड़ी से... आजादी की घास बेहतर है...
ऐसे त्यागी राणा प्रतापी... मेवाड़ी सिरमौर थे...
भामाशाह-पन्नाधाय-चेतक अश्व निराले थे...अरावली की.... (1)

बोल रही है कण-कण से... (कुर्बानी)/बलिदानी हल्दीघाटी है...
भामाशाहों की टोली अब... एकता मंच से आयी है...
दिक्श्वेताम्बर जैनी भाई... उदारता संग लाई है
भव्य चौमासा सूरी-सन्त का... वैश्विक संगठन हेतु है...अरावली...(2)

आचार्य वर श्री कनकनन्दीजी... श्रीसंघ सहित पधारे हैं...
धर्म-दर्शन-विज्ञान त्रिवेणी... बही ज्ञान/(समन्वित) की धारा है...
शोध-बोध-संगोष्ठी हेतु... पधार रहे शोधार्थी जन...
वैज्ञानिक मुनि-'सुविज्ञ' जन भी... पढ़ रहे नित गुरुकुल/(गुरुवर) में /से... अरावली... (3)

समन्वय के शंखनाद से... गूँजी हल्दी घाटी है...
वैश्विक गुरु की देशना पाकर... धन्य हुई यह माटी है...
जिनवाणी -जिनशासन-संघ के... प्रभावना की बारी है...
जन-गण-मन हर्षित भावों से...कर लो पुण्य कमाई है...अरावली...(4)

"विवाद-विसंवाद से सत्य व शान्ति अप्राप्त"

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : सायोनारा..., शायद मेरी शादी...)

वाद विवाद नहीं करणीय,
हठाग्रह दुराग्रह त्यजनीय।
सनम्र सत्याग्रह भजनीय,
संकीर्ण पूर्वाग्रह त्यजनीय ।।(1)
सरल सहज भाव करणीय,
पाखण्ड व दंभ त्यजनीय।
प्रज्ञा श्रद्धा न त्यजनीय,
दीन-हीन भाव न वरणीय।।(2)
सत्य समता शान्ति भजनीय,
विवश भय न वरणीय।
प्रेम एकता न खण्डनीय,
वैर विरोध न करणीय।।(3)
विवादेन/(बहस से) समाधान नहीं होता,
विवाद/(बहस) है संकीर्ण मानसिकता।
पराजित या विजयी दोनों,
वैचारिक समाधान नहीं पाते।।(4)
विवाद से समय नष्ट होता,
सौहार्द्र समन्वय नष्ट होता।
कलह विसंवाद द्वेष बढ़ते,
समाधान सत्य नहीं पाते।।(5)
धैर्य से सही कार्य करणीय,
कर्त्तव्य से सत्य सिद्धनीय।
'सत्यमेव जयते' यह सत्य,
विवाद नहीं है हित/(प्रिय) सत्य।।(6)
अनेकान्त स्याद्वाद सेवनीय,
प्रमाण नय भी भजनीय।
समता शान्ति रक्षणीय,
'कनकनन्दी' को यह प्रिय।।(7)

Scanned by TapScanner

मेरी अन्तः चेतना के संदेश एवं आदेश

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : शत-शत वन्दन..., है अपना दिल तो आवारा...)

बार-बार मुझे बाल काल से..., यह संदेश मिलते हैं।
अन्तःचेतना की गहराई से... यह संदेश आते हैं।।ध्रु.

सत्य को जानो स्व को पहचानो... करो अपना ही कल्याण।
राग-द्वेष मोह भ्रम त्यागकर... करो विश्व का भी कल्याण।।
स्वयं को आदर्श पहले बनाओ... अन्य को करो बाद में।
निस्पृह एकान्त शान्तभाव से... ध्यान-अध्ययन मौन में/(से)।। (1)

ढोंग पाखण्ड रूढ़ि से परे करो... स्व-आध्यात्मिक साधना।
ख्याति पूजा लाभ तेरा-मेरा त्यागो... करो समता की साधना।।
त्यागो प्रतिस्पर्द्धा अन्धानुकरण भी... त्यागो समस्त संक्लेश।
आदेश निर्देश दबाव त्याग करो... त्यागो संकल्प विकल्प।। (2)

सामाजिक लन्द-फन्द भी त्याग करो... चन्दा-चिट्ठा भी सर्व त्यागो।
भौतिक निर्माण भी त्याग करो... सर्व याचना प्रलोभन त्यागो।।
त्यागो आकर्षण-विकर्षण सर्व... अपना-पराया भी त्यागो।
आध्यात्म-साधना विशुद्धि के द्वारा... संकीर्ण भाव को त्यागो।। (3)

सत्य समता शान्ति साधना से... स्व-अनुभव बढ़ाओ।
भाव-व्यवहार इसी से करो... माध्यस्थ-भाव भी बढ़ाओ।।
स्वप्न शकुन अंगस्फुरण व... भाव-शकुन के द्वारा।
अनुभव से माध्यस्थ रहकर...भावी को जानो स्व-द्वारा।। (4)

भावी निर्माण भी भाव से होता है... यह भी अंतःसंदेश।
आत्मा-साधना ही सतत करो... यह है अन्तः आदेश।।
ऐसा ही संदेश सर्वज्ञ ने दिया... जिनवाणी का आदेश है।
इसे ही पालन करता है 'कनक'... की अन्य नहीं है आश।। (5)

(पुण्यार्जक)

स्व. कंकूबाई व वरदीचन्द के पुत्र मांगीलाल मादरेचा धर्मपत्नि छगनी देवी के सुपुत्र व पुत्रवधु
(1) प्रकाश धर्मपत्नि कञ्चन देवी (2) हिम्मत धर्मपत्नि सपनादेवी
(3) जय किशन धर्मपत्नि निशादेवी, मादरेचा परिवार
ग्राम-सेमा, तहसील-नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

Scanned by TapScanner